



DSSSB TGT & PGT



Part-B

SCHOLAR BATCH

संस्कृत

अभिज्ञानशाकुन्तलम् (चतुर्थ अंक)



LIVE

29-07-2024 05:00 PM



DSSSB TGT & PGT



SCHOLAR BATCH

संस्कृत

अभिज्ञानशाकुन्तलम् (चतुर्थ अंक)



DSSSB TGT & PGT



SCHOLAR BATCH

संस्कृत

14.2 अभिज्ञानशाकुन्तलम् (चतुर्थ अङ्क) - श्लोक 1-11

मूलपाठ –

(ततः प्रविशतः कुसुमावचयं नाटयन्त्यौ सख्यौ ।)

अनसूया- हला प्रियंवदे, यद्यपि गान्धर्वेण विधिना निर्वृत्तकल्याणा
शकुन्तलाऽनुरूपभर्तृगामिनी संवृत्तेति निर्वृतं मे हृदयम्, तथाप्येतावच्चिन्तनीयम्
अनसूया अद्य स राजर्षिरिष्टिं परिसमाप्यर्षिभिर्विसर्जित आत्मनो नगरं
प्रविश्यान्तःपुरसमागत इतोगतं वृत्तान्तं स्मरति वा न वेति।



DSSSB TGT & PGT



SCHOLAR BATCH

संस्कृत

प्रियंवदा - विस्त्रब्धा भव। न तादृशा आकृतिविशेषा गुणविरोधिना भवन्ति। तात

इदानीमिमं वृत्तान्तं श्रुत्वा न जाने किं प्रतिपत्स्यत इति।

क०५६

अनसूया - यथाऽहं पश्यामि, तथा तस्यानुमतं

प्रियंवदा - कथमिव ?

अनुवाद - (तदनन्तर फूलों को चुनने का अभिनय करती हुई दो सखियाँ प्रवेश करती हैं।)



DSSSB TGT & PGT



SCHOLAR BATCH

संस्कृत

अनसूया - सखी प्रियंवदा, यद्यपि गान्धर्व विधि से शकुन्तला का विवाह होकर कल्याण हो गया है तथा उसने अपने अनुकूल पति को प्राप्त कर लिया है, इसलिए मेरा हृदय प्रसन्न है, फिर भी यह बात तो सोचने योग्य है।

प्रियंवदा - वह क्या?

अनसूया - अब वे राजर्षि यज्ञ को समाप्त करके, ऋषियों से विदा लेकर अपने नगर में प्रवेश करके अन्तःपुर में पहुँच गए हैं। अब वह यहाँ की बातों को स्मरण करेंगे या नहीं।



DSSSB TGT & PGT



SCHOLAR BATCH

संस्कृत

प्रियंवदा - निश्चिन्त रहो। उस प्रकार की विशेष आकृतियाँ गुणों की विरोधी नहीं होतीं किन्तु पिता कण्व इस वृत्तान्त को सुनकर क्या सोचेंगे?

अनसूया जैसा मैं समझती हूँ, यह विवाह उन्हें स्वीकार होगा।

प्रियंवदा - कैसे?



DSSSB TGT & PGT



SCHOLAR BATCH

संस्कृत

व्याख्या - अनसूया और प्रियंवदा के संवाद से सूचित होता है कि दुष्यन्त एवं शकुन्तला का विवाह सम्पन्न हो गया तथा दोनों ने कुछ समय पति-पत्नी के रूप में व्यतीत किया। यज्ञ कार्य के समाप्त हो जाने पर दुष्यन्त अपनी राजधानी को लौट गए। काफी समय व्यतीत हो जाने पर भी उन्होंने शकुन्तला को बुलाने के लिए कोई सन्देश नहीं भेजा। पिता कण्व भी सोमतीर्थ से नहीं आये।

अनसूया को चिन्ता है कि दुष्यन्त को यहाँ का वृत्तान्त याद रहेगा या नहीं। प्रियंवदा को चिन्ता है कि पिता कण्व इस वृत्तान्त को सुनकर न जाने क्या सोचेंगे? प्रियंवदा कहती है कि दुष्यन्त की जैसी सौम्य एवं तेजस्विनी आकृति



DSSSB TGT & PGT



SCHOLAR BATCH

संस्कृत

है, उसी के अनुसार उसके आन्तरिक गुण होने चाहिए। दुष्यन्त शकुन्तला को धोखा देगा, ऐसी आशंका नहीं करनी चाहिए।

शब्दार्थ - कुसुमावचयम् = फूलों को चुनना, विस्त्रब्धा भव = चिन्ता न करो, गुणविरोधिनः = गुणों से विरोध करने वाले, गान्धर्वेण - गान्धर्व विवाह की विधि से, निर्वृत्तम् = सन्तुष्ट।



DSSSB TGT & PGT



SCHOLAR BATCH

संस्कृत

मूलपाठ - अनसूया - गुणवते कन्यका प्रतिपादनीयेत्ययं तावत् प्रथमः संकल्पः।

तं यदि दैवमेव संपादयति, नन्वप्रयासेन कृतार्थो गुरुजनः।

प्रियंवदा - (पुष्पभाजनं विलोक्य) सखि, अवचितानि बलिकर्मपर्याप्तानि
कुसुमानि।

अनसूया - ननु सख्याः शकुन्तलायाः सौभाग्यदेवताऽर्चनीया।

(इति तदेव कर्माभिनयतः)

(नेपथ्ये)

अयमहं भोः।



DSSSB TGT & PGT



SCHOLAR BATCH

संस्कृत

अनसूया (कर्ण दत्त्वा) सखि, अतिथीनामिव

प्रियंवदा ननूटजसन्निहिता शकुन्तला ।

अनसूया - अद्य पुनर्हृदयेनासन्निहिता । अलमेतावद्भिः कुसुमैः ।

(इति प्रस्थिते)

(नेपथ्ये)



DSSSB TGT & PGT



SCHOLAR BATCH

संस्कृत

आः, अतिथिपरिभाविनि,

दुर्वर्त्ति - शकुन्तलो विचिन्तयन्ती यमनन्यमानसा
तपोधनं वेत्सि न मामुपस्थितम् ।

स्मरिष्यति त्वां न स बोधितोऽपि सन्
कथां प्रमत्तः प्रथमं कृतमिव ।।१।।

अन्वयः - अनन्यमानसा यं विचिन्तयन्ती उपस्थितं तपोधनं वेत्सि न माम्
उपस्थितम् । स्मरिष्यति त्वां न स बोधितः अपि सन् त्वां न स्मरिष्यति ।

अनुवाद-



DSSSB TGT & PGT



SCHOLAR BATCH

संस्कृत

अनसूया गुणशाली पुरुष को कन्या देना है, यह उनका प्रथम संकल्प था। उस संकल्प को यदि भाग्य ही सम्पादित कर देता है तो बिना प्रयास के ही गुरुजन कृतार्थ हो गए।

प्रियंवदा - (फूलों के पात्र को देखकर) सखि, पूजन कार्य के लिए पर्याप्त फूल चुन लिए हैं।

अनसूया - किन्तु सखी शकुन्तला के सौभाग्य देवता का पूजन भी तो करना है।

प्रियंवदा - ठीक है।



DSSSB TGT & PGT



SCHOLAR BATCH

संस्कृत

(फिर उसी कार्य का अभिनय करती है)

(नेपथ्य में)

हे! यह मैं आया हूँ। यहाँ कौन है?

अनसूया (कान देकर) सखि, जैसे किसी अतिथि ने पुकारा है।

प्रियंवदा कुटी में शकुन्तला उपस्थित ही है। (मन में) पुनः आज हृदय से
उपस्थित नहीं है।

अनसूया अच्छा, इतने फूल पर्याप्त हैं। (यह कहकर दोनों चल देती हैं।) अहा,
अतिथि का तिरस्कार करने वाली !



DSSSB TGT & PGT



SCHOLAR BATCH

संस्कृत

अनन्यमन से जिसका ध्यान करती हुई तू अतिथि रूप में उपस्थित मुझ तपस्वी
को नहीं देख रही है, वह व्यक्ति स्मरण कराया जाता हुआ भी तुमको उसी
प्रकार स्मरण नहीं करेगा, जैसे कि पागल व्यक्ति पहले कही हुई बात को
स्मरण नहीं करता।।1।।



DSSSB TGT & PGT



SCHOLAR BATCH

संस्कृत

व्याख्या-

प्रियंवदा चिन्ता करती है कि पता नहीं पिता कण्व इस विवाह के विषय में क्या सोचेंगे? अनसूया कहती है कि मेरी समझ से पिता को यह विवाह स्वीकार होगा क्योंकि गुणवान् व्यक्ति से शकुन्तला का विवाह करना उनका संकल्प था। जिसे शकुन्तला ने अपने भाग्य से प्राप्त कर लिया है। शकुन्तला तो दुष्यन्त के ध्यान में निमग्न है और उसको बाह्य संसार का बोध नहीं है परन्तु उसकी दोनों सखियाँ उसके सौभाग्य के लिए प्रतिदिन पूजा करती हैं, जिससे कि उसका अनिष्ट न हो।



DSSSB TGT & PGT



SCHOLAR BATCH

संस्कृत

शब्दार्थ - प्रथमः संकल्पः = मुख्य निश्चय या विचार, अनायासेन - प्रयास के, सौभाग्यदेवता ईष्ट देव, युज्यते = तुम्हारी बात ठीक है, निवेदन, प्रमत्तः - उन्मत्त । बिना किसी निवेदितम् =



DSSSB TGT & PGT



SCHOLAR BATCH

संस्कृत

मूलपाठ

प्रियंवदा - हा धिक्, हा धिक् । अप्रियमेव संवृत्तम् । कस्मिन्नपि पूजार्हेऽपराद्धा
शून्यहृदया शकुन्तला । (पुरोऽवलोक्य) न खलु यस्मिन् कस्मिन्नपि । एष

दुर्वासा सुलभकोपो महर्षिः । तथा शप्त्वा वेगबलोत्फुल्लया दुर्वारया गत्या
प्रतिनिवृत्तः

अनसूया - कोऽन्यो हुतवहाद् दग्धुं प्रभवति । गच्छ । पादयोः प्रणम्य निवर्तयैनं
यावदहमर्धोदकमुपकल्पयामि ।

प्रियंवदा तथा । (तहा)

(इति निष्क्रान्ता ।)



DSSSB TGT & PGT



SCHOLAR BATCH

संस्कृत

अनसूया (पदान्तरे स्खलितं निरूप्य) अहो, आवेगस्खलितया गत्या प्रभ्रष्टं
ममाग्रहस्तात् पुष्पभाजनम्।

(प्रविश्य)

प्रियंवदा सखि, प्रकृतिवक्रः स कस्यानुनयं प्रतिगृह्णाति ? किमपि पुनः
सानुक्रोशः कृतः।

अनसूया - (सस्मितम्) तस्मिन् बहोतदपि । कथय ।



DSSSB TGT & PGT



SCHOLAR BATCH

संस्कृत

प्रियवन्दा यदा निवर्तितुं नेच्छति तदा विज्ञापितो मया। भगवन्, प्रथम इति
प्रेक्ष्याविज्ञातत्तपःप्रभावस्य दुहितृजनस्य भगवतैकोऽपराधो मर्षार्थितव्य इति।
अनसूया ततस्ततः । (तदो तदो।)



DSSSB TGT & PGT



SCHOLAR BATCH

संस्कृत

अनुवाद-

प्रियंवदा हाय! हाय! अनर्थ हो गया। किसी आदरणीय व्यक्ति के प्रति शून्य हृदय शकुन्तला ने अपराध कर दिया। (सामने देखकर) और किसी साधारण व्यक्ति के प्रति नहीं। यह सरलता से क्रुद्ध हो जाने वाले दुर्वासा ऋषि हैं। इस प्रकार शाप देकर वेग के बल से उछलती हुई और न रोकी जा सकने वाली गति से लौट रहे हैं।



DSSSB TGT & PGT



SCHOLAR BATCH

संस्कृत

अनसूया अग्नि के अतिरिक्त और कौन वस्तु जलाने में समर्थ होगी? जा और पैरों में प्रणाम करके इनको लौटा ला, तब तक मैं पूजा का सामान तैयार करती हूँ।

प्रियंवदा अच्छा। (यह कहकर निकल गयी)

अनसूया (एक पग के बाद फिसलने का अभिनय करके) ओह, घबराहट से फिसलती हुई गति वाले मेरे हाथ से पुष्पों का पात्र गिर गया। (यह कहकर फूलों को उठाने का अभिनय करती है।)



DSSSB TGT & PGT



SCHOLAR BATCH

संस्कृत

(प्रवेश करके)

प्रियंवदा - सखी! स्वभाव से टेढ़े वह दुर्वासा किसकी विनती स्वीकार करते हैं?

तब भी मैंने उनको कुछ दयालु कर लिया।

अनसूया - (मुस्कुराकर) उनके लिए यह भी बहुत है। बताओ।

प्रियंवदा - जब उन्होंने लौटना नहीं चाहा तो मैंने निवेदन किया- भगवन् !

आपके तप के प्रभाव को न जानने वाली आपकी पुत्री का यह पहला अपराध है, यह समझकर आप इस एक अपराध को क्षमा कर दीजिए।

अनसूया - उसके पश्चात् ।



DSSSB TGT & PGT



SCHOLAR BATCH

संस्कृत

व्याख्या- दुर्वासा ऋषि अतिथि के रूप में आश्रम के द्वार पर उपस्थित हुए और उन्होंने शकुन्तला को पुकारा। परन्तु दुष्यन्त के ध्यान में मग्न शकुन्तला ने ऋषि की पुकार को नहीं सुना। स्वभाव से क्रोधी होने के कारण वह शकुन्तला को शाप देकर चले गए। भारतीय साहित्य में दुर्वासा ऋषि क्रुद्ध होने के लिए प्रसिद्ध हैं। थोड़े से कारण से भी वे क्रुद्ध हो जाते हैं। दुर्वासा को देखकर सखियाँ घबरा जाती हैं। दुर्वासा ऋषि अग्नि के सदृश जलाने वाले क्रोधी स्वभाव के हैं। वे किसी का अनुनय कठिनाई से ही स्वीकार करते थे। फिर भी प्रियंवदा उनसे अनुनय-विनय करती है तथा शकुन्तला के अपराध को क्षमा करने हेतु विनय करती है।



DSSSB TGT & PGT



SCHOLAR BATCH

संस्कृत

शब्दार्थ - अप्रियमेव = अशुभ, शून्यहृदया = अन्यमनस्क, अर्धोदकम् = अर्ध
और जल, अग्रहस्तात् = हाथ से, प्रकृति वक्रः = स्वभाव से कुटिल, सानुक्रोशः
= दया से युक्त ।



DSSSB TGT & PGT



SCHOLAR BATCH

संस्कृत

मूलपाठ

प्रियंवदा ततो न मे वचनमन्यथाभवितुमर्हति, किं त्वभिज्ञानाभरणदर्शनेन शापो
निवर्तिष्यत इति मन्त्रयमाण एवान्तर्हितः।

अनसूया शक्यमिदानीमाश्वासितुम्। अस्ति तेन राजर्षिणा संप्रस्थितेन
स्वनामधेयाङ्कितमङ्गुलीयकं स्मरणीयमिति स्वयं पिनद्धम् । तस्मिन्
स्वाधीनोपाया शकुन्तला भविष्यति।

प्रियंवदा सखि, एहि । देवकार्यं तावद् निर्वर्तयावः।



DSSSB TGT & PGT



SCHOLAR BATCH

संस्कृत

(इति परिक्रामतः ।)

अनसूया - प्रियंवदे, द्वयोरेव नौ मुख एष वृत्तान्तस्तिष्ठतु। रक्षितव्या खलु
प्रकृतिपेलवा प्रियसखी।

प्रियंवदा - को नामोष्णोदकेन नवमालिकां सिञ्चति

(इत्युभे निष्क्रान्ते)

विष्कम्भकः ।

1 Aug
2 Aug
Off



DSSSB TGT & PGT



SCHOLAR BATCH

संस्कृत

अनुवाद-

प्रियंवदा - तो मेरा वचन अन्यथा नहीं हो सकता किन्तु पहचान का आभूषण दिखाने से शाप समाप्त हो जाएगा, यह कहकर स्वयं अन्तर्धान हो गए।

अनसूया - अब आश्वासन रखा जा सकता है। प्रस्थान करते हुए उस राजर्षि ने अपने नाम से अंकित अंगूठी शकुन्तला की अंगुली में यह कहकर पहना दी थी कि इसे स्मरण रखना। उस अंगूठी के द्वारा इस शाप का उपाय शकुन्तला के अधीन रहेगा।



DSSSB TGT & PGT



SCHOLAR BATCH

संस्कृत

प्रियंवदा - सखि, आओ। देवता की पूजा के कार्य को निबटा लें। (यह कहकर घूमती हैं।)

प्रियंवदा - (देखकर) अनसूये, देखो। बायें हाथ पर मुख को रखे हुए प्रिय सखी चित्रलिखित-सी प्रतीत होती है। पति के ध्यान में लगी हुई यह स्वयं को भी नहीं पहचानती, तो फिर अतिथि का तो कहना ही क्या?

अनसूया - प्रियंवदे, निश्चय ही यह वृत्तान्त हम दोनों के मुख में रहे। स्वभाव से - कोमल प्रिय सखी की निश्चय से रक्षा करनी चाहिए।



DSSSB TGT & PGT



SCHOLAR BATCH

संस्कृत

प्रियंवदा - कौन व्यक्ति नवमालिका को गरम जल से सींचता है? - (यह कहकर दोनों निकल गयीं)

विष्कम्भक समाप्त।



DSSSB TGT & PGT



SCHOLAR BATCH

संस्कृत

व्याख्या- दुर्वासा ऋषि शाप के प्रभाव को कम करने का उपाय बताते हैं कि कोई अभिज्ञान चिन्ह दिखाने से शकुन्तला को दुष्यन्त पहचानने में सक्षम होगा। दुर्वासा ऐसा कहकर अन्तर्धान हो गए। कहने का आशय यह है कि वे योग-शक्ति से अदृश्य हो गए। अनसूया प्रियंवदा से यह वृत्तान्त गोपनीय रखने तथा शकुन्तला को न बताने के लिए कहती है इस पर प्रियंवदा कहती है कि दुर्वासा के शाप को बता कर मैं शकुन्तला को पीड़ित नहीं करूँगी जिस प्रकार नवमालिका को गरम जल से सींचने पर वह मुरझा जाती है,



DSSSB TGT & PGT



SCHOLAR BATCH

संस्कृत

उसी प्रकार शकुन्तला को यदि इस शाप का वृत्तान्त विदित हो गया तो वह भी अत्यधिक पीड़ित होगी। शकुन्तला नवमालिका के पुष्प के समान है तथा दुर्वासा का शाप गरम जल के समान जला देने वाला है।

शब्दार्थ - अन्तर्हितः = अन्तर्धान हो गए, संप्रस्थितेन = प्रस्थान करते समय, स्मरणीयमिति = स्मृतिचिन्ह के रूप में, पिनद्धम् = पहनाया, प्रकृतिपेलवा = स्वभाव से कोमल।